स्वतंत्रता की मार्क्सवादी संकल्पना

सर्व हित की सिद्धि के लिए यह जरूरी है कि विभिन्न व्यक्ति समाज के रूप में एक जुट होकर पूरे समाज के हित में अपने अपने हित को देखें। केवल तर्कसंगत उत्पादन प्रणाली के अंतर्गत ही व्यक्ति सच्चे अर्थ में स्वतंत्र हो सकते हैं, ऐसी स्थिति में उत्पादन के साधनों पर पूरे समाज का स्वामित्व होगा।

प्रमुख प्रतिपादक :-

→ फ्रेडरिक एंगेल्स (एंटी-ड्यूरिंग)(Book) - इनके अनुसार के स्वतंत्रता का अर्थ यह है कि मनुष्य प्रकृति के नियमों का ज्ञान प्राप्त करके अपने निश्चित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए उनका व्यवस्थित प्रयोग करे। इस स्थिति में मनुष्य प्रकृति का दास नहीं रह जाता बल्कि वह अपने जीवन का ध्येय स्वयं निर्धारित करता है और प्रकृति के नियमों को उस ध्येय की पूर्ति का साधन बना लेता है।

→ कार्ल मार्क्स 'Economic and Philosophical manuscripts' of 1844. में लिखा है कि पूंजीवाद मनुष्य को उसकी रचनात्मक शक्तियों और कोमल भावनाओं को नष्ट कर देता है। मनुष्य अपनेआप से बेगाना हो जाता है। इस परिस्थिति में मनुष्य की स्वतंत्रता की क्षमता नष्ट हो जाती है मनुष्य 'अलगाव (alienation) का शिकार हो जाता है।

स्वतंत्रता के दो तत्व कहे जा सकते हैं :-

1. न्यूनतम प्रतिबंध - व्यक्ति के जीवन पर शासन और समाज के दूसरे तत्वों की ओर से न्यूनतम प्रतिबंध होने चाहिए।

Scanned with CamScanner

2. व्यक्तित्व के विकास हेतु सुविधाएं :- समाज और राज्य द्वारा व्यक्ति को उसके व्यक्तित्व के विकास हेतु अधिकाधिक सुविधाएं प्रदान की जानी चाहिए।

स्वतंत्रता के रूप :-

1. प्राकृतिक स्वतंत्रता - रूसो ने लिखा है 'मनुष्य स्वतंत्र उत्पन्न होता है किंतु सर्वत्र वह जंजीरों से जकड़ा हुआ रहता है' यह स्वतंत्रता व्यक्ति के व्यक्तित्व के विकास के लिए आवश्यक है। सामूहिक हित में स्वतंत्रता को सीमित करना आवश्यक है नहीं तो मत्स्य न्याय व्यवहार में प्रचलित होने लगेगा केवल शक्तिशाली लोगों की स्वतंत्रता।

2. व्यक्तिगत स्वतंत्रता - जे० एस० मिल प्रबल समर्थक हैं। व्यक्ति के उन कार्यों पर कोई प्रतिबंध नहीं होना चाहिए जिनका संबंध केवल उसके ही अस्तित्व से हो।

3. नागरिक स्वतंत्रता - प्रत्येक व्यक्ति को समान अवसर और अधिकार प्रदान करना। (लोकतंत्र के लिए)

4. राजनीतिक स्वतंत्रता - राज्य के कार्यों में सक्रिय भागीदारी की शक्ति

5. आर्थिक स्वतंत्रता - व्यक्ति की ऐसी स्थिति से है, जिसमें व्यक्ति अपने आर्थिक प्रयत्नों का लाभ स्वयं प्राप्त करने की स्थिति में हो तथा किसी प्रकार उसके श्रम का दूसरे के द्वारा शोषण न किया जा सके। आर्थिक समानता के अभाव में राजनीतिक स्वतंत्रता निरर्थक है।

6. राष्ट्रीय स्वतंत्रता

7. नैतिक स्वतंत्रता

Scanned with CamScanner